प्रातःक्लास 25-4-68 ओमशान्ति आत्माभिमानी हो?

ओमशान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं, क्योंकि यहां समझने वाले ही आ सकते हैं। यहां कोई मनुष्यनहीं पढ़ाते हैं। यह तो भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाचः भगवान की भी पहचान चाहिए। नाम तो कितना बड़ा है। भगवान। फिर कहते हैं नाम रूप से न्यारा है। अभी है भी जैसे प्रैक्टीकल से न्यारा। इतनी छोटी बिन्दी है, जो मनुष्य समझ ही नहीं सकते। बाबा बैठसमझाते हैं तो बच्चे बन्दर खाते हैं। आत्मा भी छोटी बिन्दी है। कहते भी हैं आत्मा सितारा है। जैसे वह सितारे हैं, वह छोटे तो नहीं हैं। यह आत्मा (सितारा) तो सच्च2 छोटी हैं। बाबा भी बिन्दी है। यह भी बच्चे समझते हैं। बाप तो सदा पवित्र है। उनकी महिमा भी है ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर। इसमें मुंझने की कोई बात नहीं। मुख्य बात है ही पावन बनने की। विकारों पर ही झगड़ा होता है। पावन बनने लिए पतित-पावन को बुलाते हैं तो जरूर पावन बनना पड़ेगा ना। इसमें भी मुंझने की बात नहीं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। और सतसंगों में यह बातें नहीं होती। कहां भी हंगामा नहीं होता। यहां हंगामा खास इस बात पर ही होता है। और तो कोई गड़बड़ी नहीं। बाप पढ़ाते हैं, बाप कहते हैं मैं आता ही हूं बानप्रस्त अवस्था में। बानप्रस्तअवस्था का कायदा भी यहां से शुरू होता है। बाप जबप्रवेश करते हैं तो बानप्रस्त अवस्था में। तो बानप्रस्त अवस्था वाले जरूर बानप्रस्त में ही रहेंगेवाणी से परे जाने के लिए बाप को याद कर पूरा पवित्र बनना है। पवित्र बनने का रास्ता तो एक ही है। और कोई है नहीं। वापस जाना है तो पवित्र जरूर बनना है। जानातो सभी को है। दो-चार तो नहीं जावेंगे। सारी पु पतित दुनिया को बदली होना है। इस ड्रामा का किसको भी पता नहीं है। सतयुग से कलियुग तक इस ड्रामा का चक्र है। सूक्ष्मवतन को तो बाबा उड़ा देते हैं। जो कुछ है नहीं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और पावन भी जरूर बनना है। तब ही तुम शान्तिधाम सुखधाम जा सकेंगे। गायन भी है गति-सद्गति दाता एक ही हैं। सतयुग में बहुत ही थोड़े होते हैं। और पवित्र रहते हैं। कलियुग में है अनेक धर्म और अपवित्र हो पड़े हैं। यह तो बहुत ही सहज बात है समझने की। बाप तो पहले से ही बता देते हैं। बाप तो जानते हैं हंगामा होगा। न जानते हो युक्तियां क्यों रचे कि ऐसे चिट्ठी ले आओ हम ज्ञान अमृत पीने जाते हैं। जानते हैं झगड़े तो होंगे ही। यह भी नूंध है। आश्चर्यवत अच्छी रीतपहचानन्ती, पहचान कर ज्ञान भी लेते औरों को भी ज्ञान देते फिर भी अहो माया। उन्हों तुम अपने तरफ खैंच लेती हो। यह नई बात नहीं। ड्रामा में नूंध है। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार होना ही है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकते। मनुष्य सिर्फ अक्षर कह देते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। यह भी ड्रामा में नूंध है। यह बहुत ही ऊंची पढ़ाई है। छोटे2 बच्चे आते हैं, बाबा कहते हैं यह कैसे पार जावेंगे। आंखें ऐसी धोखाबाज़ है बात मत पूछो। कोई सुन्दर स्त्री को देखा और लड्डू बन जाते हैं। तमोप्रधान दुनिया है ना। कालेजों-स्कूलों में तो बहुत ही खराब हो पड़ते हैं। विलायत में तो बातमत पूछो। इसलिए आजकल दवाईयां ऐसी निकालते हैं, विकार में जाते रहे, बच्चे पैदा न हो। क्योंकि अनाज़ आद मिलता नहीं। तो दवाइयों पर काम चलाते हैं। परन्तु उस से तो शरीर की बहुत कमज़ोरी हो जाती है। और ही जल्दी। आयु भी कम हो जाती है। टेढ़े-बांके मनुष्य हो जाते हैं। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं। वहां तो आयु भी बड़ी रहती है। मनुष्यों को यह खयाल नहीं रहता भारत स्वर्ग था ना। वह कह देते सतयुग को लाखों वर्ष हुये। बाप समझाते हैं यह तो कल तुमको राज-भाग देकर गये, सभी कहां गंवा दिया? जैसे बाप बच्चों को कहते हैं इतनी मिलकियत तुमको दी कहां गंवाये दी। बहुत फर्स्ट क्लास धनवान होते हैं, बच्चे को विलायत भेजते, घूम-फिर चक्र लगा कर आओ, बच्चा गया, एक सेसभी पैसे उड़ा कर खत्म कर देते। एक राजा का बच्चा था। गया विलायत। बस। बच्चे को नशा चढ़ा पैसे का और राजाई का। बड़े2 आदमियों को पार्टियां देने लग पड़ा। एक पार्टी में 40हजार रुपया खर्चा किया। सच्चे सोने के फूल बनाये, सभी आने वाले पर उन

सोने फूलों की वर्षा की। बहुत ही धनवान का बच्चा था। 12 मास में करोड़ रुपया खत्म कर दिया। बाप ही मजब में पड़ गया। ऐसे 2 कपुत बच्चे निकल पड़ते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं मैं तुमको कितना धन देकर गया। कितना तुमको लायक, विश्व का मालिक बनाकर गया। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारा क्या हाल हो गया है। तुम वही बच्चे हो ना। तुम कितने धनवान थे। यह है बेहद की बात। जो तुम समझाते हो। यह भी मिशाल है ना रोज कहते हैं शेर आया शेर आया। परन्तु शेर आता नहीं था। एक दिन सच्च शेर आ गया। तो तुम भी कहते हो मौत आया कि आया। तो कहते हैं यह तो रोज कहते हैं। विनाश होता नहीं। अभी तुम जानते हो एक दिन विनाश होना जरूर है। उसकी फिर कहानी बना दी है। बेहद का बाप कहते हैं उन्हों का तो दोष नहीं है। कल्प पहले भी हुआ था। 5000हजार वर्ष की बात है। बाबा ने बहुत ही बार बोला है यह भी तुम लिखते रहो कि 5000हजार वर्ष पहले भी हू बहू ऐसा म्युजियम खोला था। भारत में देवी देवता धर्म की स्थापना करने। एकदम क्लीयर लिख देना चाहिए। तो आपर समझने की कोशिश करेंगे। बाप आया हुआ है। बाप की वर्सा है स्वर्ग की बादशाही। भारत स्वर्ग था ना। पहले नई नईदुनिया में नय भारत था। हेविन था। हैविन सो हेल, हेल सो हेविन। यह बहुत बड़ा बेहद का ड्रामा है। इसमें सभी पार्टधारी हैं। 84 जन्मों का पार्ट बजाकर फिर अभी वापस जाते हैं। पहले हम मालिक थे। फिर कंगाल बने। फिर अभी बाप के मत पर चल कर मालिक बनते हैं। तुम जानते हो हम कल्प2 श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। पावन भी जरूर बनना है। पावन बनने के कारण ही अत्याचार होते हैं। बच्चियां कितनी मार खाती हैं। नंगन कर बाहर निकाल देते हैं। जैसे सीढ़ी में बिठाया है। भिखारी भी तो बराबर हैं। यह तो अखबार में भी पड़ा था। तुमको कोई कुछ कह न सके। तुम कहेंगे इस समय अखबार में जिस ने डाला उनको कुछ कहा नहीं हम ने डाला तो ऐसे क्यों कहते हो। बाप समझाते तो बहुत हैं। फिर बाहर जाने से बेसमझ बन पड़ते हैं। आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती ज्ञान देवन्ती फिर अहो मम माया, वैसे का वैसे बन जाते हैं। और ही बदतर। काम विकार में फंसे और गिरे। शिव बाबा इस वेश्यालय को आकर शिवालय बनाते हैं। तुम बच्चों को भी पुरुषार्थ करना है ना। इस विद्या के बात पर कितना हंगामा हुआ। बहुत डर गये। समझा कोई काल है। जादूगर है। यह तो बेहद का बाप बहुत ही मीठा है। अगर सभी सभी कोपता पड़ जाये तो ढेर के ढेर आ जाये। पढ़ाई चल न सके। पढ़ाई तो एकान्त में चाहिए ना। सुबह को कितने शान्त रहते थे। हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। याद के सिवाय विकर्म कैसे विनाश होंगे। यही पुर्णी लगा हुआ है। अभी पतित कंगाल बन पड़े हैं। फिर पावन सिरताज कैसे बने। बाप तो बिलकुल सहज बताते हैं। हंगामा तो होगा। डरने की कोई बात नहीं। बाप तो है बिलकुल साधारण ना। ड्रेस आदि सभी वही हैं। कुछ भी फर्क नहीं। सन्यासी लोग तो फिर भी घर-बार छोड़ गेरू कफन पहन लेते हैं। उनकी तो वही पहिरदाईस है। सिर्फ बाप ने प्रवेश किया है। और तो कोई फर्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते हैं पालन-पोषण करते हैं वैसे भी यह भी करते हैं। कोई अहंकार की बात नहीं। बिलकुल ही साधारण चलते हैं। बाकी रहने लिए मकान तो बनाना पड़े ना। वह भी साधारण है। कोई मारबुल आदि तो नहीं। नहीं तो बेहद का बाप पढ़ाते हैं कितना अच्छा होना चाहिए। परन्तु बाप तो साधारण तन में साधारण रीति पढ़ाते हैं। बच्चे2 कह कितना प्यार से पढ़ाते हैं। बाप तो है चकमक। सभी को कशिश करते हैं। परन्तु इतना जोर से खेंचते नहीं हैं, नहीं तो तुम ठहर न सको। एकदम चटक पड़ो। चकमक कम है क्या। बच्चियां पवित्र बनती है तो बहुतसुख मिलता है। वह तो सिर्फ कह देते शक्ति है। परन्तु शक्ति किसको कहा जाता है वह समझते नहीं। सर्वशक्तिवान है बाबा। वह सभी को ऐसा बनाते हैं। परन्तु सभी एक जैसे तो बन न सके। फिर तो फिक्स फिचर्स भी ऐ जैसा हो जाये। यह तो ड्रामा बना हुआ है। 84 जन्ममें तुम को वही 84 फिचर्स मिलनी है। जो कल्प पहले मिली थी है।

इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। कितनी समझ ने और धारण करने की बातें हैं। विनाश भी जरूर होना ही है। लड़ाई शान्त तो अभी हो न सके। आपस में लड़ते ही रहते हैं। मौत तो जैसे सिर पर खड़ा है। ड्रामा अनुसार एक आदी सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना बाकी अनेक धर्मों का विनाश तो होना ही है। एटामिक बम्ब भी बनाते रहते हैं। नैचरल कैलेमिटीज़ भी होंगी। बड़े2 पत्थर गिरेंगे तो सभी के मकान टूट पड़ेंगे। कितना भी मज़बूत रीति मकान बनावें, फाउंडेशन पक्का डालें परन्तु यह रहेंगे नहीं। वह समझते हैं कि अर्थक्वेक में भी गिर न सकेंगे। परन्तु बाप कहते हैं कितना भी करो 100 मार/मंजिल बनाओ परन्तु विनाश तो होना ही है। यह कुछ भी रहेंगे नहीं। सतयुग में यह थोड़े ही थे। तुम यहां आये हो स्वर्ग का वर्सा पाने। विलायत में देखो क्या लगा पड़ा है। उनको रावण का पाम्प कहा जाता है। माया कहती है हम भी कम नहीं हैं। वहां तो तुम्हारे हीरों जवाहरों के महल होते हैं। सोने की सभी चीज़ें। वहां तो दूसरा-तीसरा मंजिल बनाने की दरकार नहीं। ज़मीन आद का खर्चा थोड़े ही लगता है। सभी कुछ मौजूद रहता है। तो बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए सभी को पैगाम पहुंचाना है। अच्छे2 बच्चे पण्डा बन जाते हैं रिफ्रेश होने लिए। यह भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी आवेंगे। इतने सभी आये हैं। पता नहीं इन सभी को फिर देखूंगा या नहीं। आये तो ढेर के ढेर। फिर आश्चर्यवत भागन्ति हो गये। लिखते हैं बाबा हम गिर गये। और की कमाई चट कर दी। फिर इतना ऊंच चढ़ न सके। यह है ही बड़ी ते बड़ी अवज्ञा। आर्डीनेन्स निकलते हैं ना फलाने टाईम पर कोई भी बाहर न निकले। नहीं तो शूट कर देंगे। बाप भी कहते हैं विकार में जावेंगे तो शूट हो जावेंगे। भगवान का हुकुम है ना। खबरदार रहना है। जबरदस्ती करते हैं तो फिर तो उन पर पाप चढ़ता है। आजकल तो ऐसी दवाईयां भी निकली हैं जो खिला खिलाकर गन्दा कर देते हैं। गैस आद की ऐसी2 चीज़ें निकालते हैं जो मनुष्य बैठे2 फट से खलास हो जाता। यह सभी ड्रामा में नूंध है। क्योंकि पिछाड़ी में हस्पीटल आद थोड़े ही रहेंगे। झट आत्मा शरीर छोड़ कर जा दूसरा लेती है। कलेश आद सभी छूट जाते हैं। आत्मा स्वतंत्र है। जिस समय पर आयु पूरी होती है तो शरीर छोड़ देते हैं। वहां काल होता नहीं। रावण ही नहीं तो काल फिर कहां से आवेगा। यह रावण की दूत है ना। भगव के नहीं। भगवान तो कहते बच्चे ही प्यारे हैं। बाप कब बच्चों का दुःख सहन कर न सके। ड्रामा अनुसार पोना कल्पहे भी जाती सुख पाते हो। इतना सुख बाप देते हैं तो तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अन्तिम जन्म है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप है सर्वशक्तिवान। अथार्टी। जो सभी शास्त्र आद पढ़ते हैं उनको अथार्टी कहते हैं। अभी बाप कहते हैं उन सभी का अथार्टी तो मैं हूं। मैं इन ब्रह्मा द्वारा तुमको सभी शास्त्रों का सर तत्त्व सुनाता हूं। अपने को आत्मा मुझ बाप को याद करो। बाकी पानी में स्नान करने से पावन बन नहीं सकते हैं। कहां चुलु पानी भी होगा तो उनको भी तीर्थ समझ झट वह पानी डाल देंगे। इसको कहा जाता है तमोप्रधान निश्चय जिस दुर्गति ही होती है। यह तुम्हारा है सतोप्रधान निश्चय। बाप समझाते हैं इन में डरने की बात नहीं है। सिन्ध में समझते थे काल आया है। अखबारों में क्या डालते थे। झूठ माना झूठ सच्च की रती नहीं। ढेर के ढेर बच्चियां भाग आईं। उन्हों के लिए भी सभी प्रबन्ध रचना पड़े। बाबा इन में प्रवेश होकर इनको स्वाहा न करावे तो काम कैसे चले। कैसे सभी आये। बाबा ने सम्भाला ना। तुम सभी भाग कर बेहद के बाबा पास आ गये। इसको ही चरित्र कहा जाता है। बेहद का बाप इन में थे। तो इतने सभी भाग आये। भट्ठी बननी थी बाबा सभा आद सभी झाड़ू आद लगाते थे। मोटरें आद साफ करते थे। कुर्सी के तो जैसे मालिक बन गये। बड़े मिनिस्टर आद समझते थे यह खुदाई खिदमतगार है। जो मांगो कहते हैं जो हुकुम। वहां तुम्हारी जैसे राजा थी। सामने कतलाम होते रहते थे। तुम्हारी कितनी सम्भाल होती थी। अच्छा आज भोग है। स्वानी व को स्वानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।